AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | An Open Access & Indexed
Volume 07 | Issue 05 | May 2026 | *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 24- 29

ग्रामीण भारत में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और सतत् विकास की अवधारणा

पर्वत कुमार कृष्णा, रिसर्च स्कॉलर (राजनीति विज्ञान), कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़
डॉ. अनिता सामल, प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान) कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़

सारांश

भारतीय संविधान ने देश कि महिलाओं को सभी मौलिक अधिकार प्रदान करने के साथ – साथ, राज्यों को भी महिलाओं कि भूमिका व दशा सुधारने के लिए, महिला वर्ग के लिए सकारात्मक भेदभाव कि तकनीक अपनाने व उसे लागू करने के निर्देश दिए है। वर्ष २०११ कि जनगणना के तहत् भारत कि कुल जनसंख्या में महिलाओं कि जनसंख्या ५८.७० करोड़ है अर्थात लगभग ४८ प्रतिशत कि महिला अबादी है। देश में जनसंख्या कि कुल अबादी कि ६५ प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है। जिसकी मुख्य आजिविका कृषि है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि रोजगार का पारम्परिक साधन है। भारत के ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ४६ प्रतिशत अबादी कृषि पर निर्भर करती है। विज्ञान एवं कृषि तकनीकि के विकास ने पारम्परिक कृषि को आद्यौगिक कृषि में बदल दिया है। ग्रामिण अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं एवं पुरुषों कि समान भूमिका परिलक्षित होती है। लेकिन भारत में रुढ़िवादी व्यवस्था के लम्बे समय तक प्रचलन एवं पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अधिपत्य के कारण उपभोग के स्तर पर सामाजिक व्यवस्था में पुरुष वर्ग का वर्चस्व कायम है। विश्व में मानव जीवन के सम्पूर्ण विकास के उद्देश्य से विकसित किए गए सतत् विकास कि अवधारणा बहुआयामी है। एस. डी. जी. के १७ वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारत के ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं एवं पुरुषों कि लगभग सामान भूमिका है।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Mr. Parwat Kumar Krishna Research Scholar, Kalinga University, Raipur, Chattisgarh Email: parwatkrishna@gmail.com	

मुख्य शब्द – व्यवस्था, अधिकार, सामानता, साझा कार्यक्रम, विकास।

प्रस्तावना – औद्योगिक भारत बनने कि ओर अग्रसर भारत को आज भी कृषि प्रधान एवं श्रम प्रधान देश के रुप में पहचाना जाता है। क्योंकि देश कि आधे से अधिक जनसंख्या कि आजिविका का मुख्य साधन आज भी कृषि कार्य ही है। देश के परम्परागत् ग्राम प्रधान सामाज में पितृ सत्तात्मक व्यवस्था का अधिपत्य वर्तमान में भी विद्यमान है। संवैधानिक व्यवस्था देश में महिलाओं को औपचारिक एवं कानूनी समानता एवं अधिकार कि उपलब्धता एवं उपभोग को सुनिश्चित करता है। लेकिन ग्रामीण अंचल में सामाज में व्यवहारिक स्तर पर अपने इन अधिकारों से अधिकांश महिलाएं अनभिज्ञ है एवं मनोवैज्ञानिक कारणों से अपने अधिकारों का उपभोग नहीं कर पाती हैं। विश्व समृद्धि, शांति एवं सुरक्षा के अनुकूल विकसित किए गए सतत् विकास लक्ष्यों का साझा कार्यक्रम जीवन के अन्य पहलू के साथ – साथ महिला अधिकार से भी संबधित है। जो कि अग्रलिखित है।

१ गरीबी शून्यता।
२ भुख का अभाव।
३ उत्तम स्वास्थ्य कल्याण।
४ वेल्यूबल एजुकेशन।
५ जेंडर इक्वालिटी।
६ शुद्ध पानी एवं स्वच्छ पर्यावरण।
७ उर्जा कि आसान उपलब्धता।
८ आदर्श कार्य एवं आर्थिक ग्रोथ।
९ औद्योगिकीकरण एवं नवप्रवर्तन।
१० असामानता का अभाव।
११ मजबूत शहरी विकास एवं सुढृढ़ समुदाय।
१२ उपभोग एवं उत्पादन कि साझा जिम्मेदारी।
१३ जलवायु पर एक्शन।
१४ सागरीय जीवन का सतत् विकास।
१५ स्थलीय जीवन का सतत् विकास।
१६ न्याय, शांति एवं सुढृढ़ संस्थान।
१७ लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए साझा कार्यक्रम।

सतत् विकास लक्ष्यों के उपरोक्त साझा कार्यक्रम मानवीय जीवन को प्रभावित करने वाले समस्त कारको से सम्बंधित है। जिसे साल २०३० तक प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है। हालांकी यह अवधी भी अंतिम नहीं है। क्योंकि इसमें से कई लक्ष्यों कि सिद्धी कि आवश्यकता निरंतर बनी रहेगी।

उद्देश्य – १ सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं कि भूमिका का अध्ययन करना।

२ ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं कि भूमिका कि वर्तमान स्थिती का अध्ययन करना।

महत्व – भारत के ग्रामीण अर्थव्यवस्था कि रीढ़ कृषि है। देश के औद्योगिक संचालन के लिए भी आवश्यक संसाधन एवं कच्चे माल कि अधिकांश आपुर्ति कृषि पर निर्भर करता है। विश्व में भी ८० प्रतिशत से अधिक उद्योग – व्यवसाय एग्रो बेस्ड इंडस्ट्री के रुप में स्थापित है। कृषि से ही इन्हें कच्चें माल कि प्राप्ति होती है। जैसे कि वस्त्र उद्योग, चाय उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग, रबर उद्योग, कागज उद्योग, रबर उद्योग, ड्रग उद्योग इत्यादि। समकालिन भारत के ग्रामीण महिलांए घरेलू कार्यो के साथ – साथ, कृषि कार्यों का भी सफलता पूर्वक निष्पादन कर, देश के आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर दोहरी भूमिका का निर्वहन कर रही है। जिससे कि महिलाओं कि सामाजिक सहभागिता में वृद्धि हो रही है।

परिकल्पनाएं – १ सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है।

२ देश के ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं कि भूमिका में वृद्धि अपेक्षित है।

मूल्यांकन – ग्रामीण भारत कि वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश को पैतृकतावाद के अधीन माना जाना अतिश्योक्ति नहीं है। क्योंकि व्यवहार के धरातल पर पितृतंत्रीय व्यवस्था महिलाओं के हितों के मार्ग में बाधा साबित होती रही है। सतत् विकास लक्ष्यों का साझा कार्यक्रम मानव जीवन के सामाजिक , आर्थिक, राजनीतिक एवं वैवेक्तिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। सतत् विकास कि अवधारणा का विकास १९६० के दशक से प्रारम्भ हुआ। जिसे कि वर्तमान में साझा प्रयास के माध्यम से प्राप्त करने वैश्विक स्तर पर प्रयास किया जा रहा है। जिसमें महिलाओं कि सतत् सहभागिता है। देश कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। लेकिन कृषि के साथ – साथ आखेट, पशुपालन, वन संसाधनों का संचयन एवं संवर्धन जैसे क्रियाकलाप भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुढ़ृढ़ता प्रदान कर रहा है। तकनीकि विकास एवं विभिन्न क्रांतियों जैसे

कि खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में हरित क्रांति, दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में श्वेत क्रांति, तिलहन उत्पादन के क्षेत्र में पीली क्रांति, मतस्य उत्पादन के क्षेत्र में नीली क्रांति, कुक्कुट उत्पादन के क्षेत्र में रजत क्रांति, टमाटर उत्पादन के क्षेत्र में लाल क्रांति, औषधी उत्पादन के क्षेत्र में गुलाबी क्रांति, मसाला उत्पादन के क्षेत्र में बादामी क्रांति, फल उत्पादन के क्षेत्र में सुनहरी क्रांति, आलू उत्पादन के क्षेत्र में गोल क्रांति, बांस उत्पादन के क्षेत्र में हरित सोना क्रांति, मोटे अनाज उत्पादन के क्षेत्र में मूक क्रांति एवं सभी क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि के लिए इंद्रधनुषीय क्रांति इत्यादि ने परम्परागत कृषि को औद्योगिक स्वरुप प्रदान किया है। कृषि का तकनीकि विकास विकसित भारत के लक्ष्य कि ओर अग्रसर है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विज्ञान एवं तकनीकि नवाचार ने एक नया आयाम दिया है। जिसके कारण कृषि के प्रकार एवं पद्धतियों में परिवर्तन आया है। ग्रामीण परिवार कि आर्थिक, सामाजिक परिवेष में सुधार हुआ है। महिला वर्ग कि दशा में भी सुधार हुआ है। ग्रामीण महिलाएं आर्थिक सुढ़ढ़ता कि ओर कदम बढ़ाते हुए विभिन्न प्रकार के साहचर्य निर्माण कि ओर उन्मुख हूए हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में वर्तमान में ८२,७६,१३० स्वयं सहायता समूह है। महिलाओं के कार्य निष्पादन कि क्षमता के आंकलन से यह सिद्ध किया जा सकता है कि राष्ट्र विकास कि मूल शक्ति महिला सशक्तीकरण में निहित है।

वर्ष	कुल जनसंख्या (मिलीयन में)	ग्रामीण जनसंख्या (मिलीयन में)	कृषि श्रमिक (मिलीयन में)	औसत वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)
१९५१	३६१	२९८	९७	१.२५
१९६१	४३९	३६०	१३१	१.९६
१९७१	५४८	४३९	१२५	२.२१
१९८१	६८३	५२५	१४८	२.२२
१९९१	८४६	६३०	१८५	२.१६
२००१	१०२८	७४२	२३४	१.९७
२०११	१२१०	८३३	२६३	१.६५

स्त्रोत - रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया।

निष्कर्ष एवं सुझाव - ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं के समक्ष विकास के मार्ग में निम्नलिखित बधाएं दृष्टिगोचर होती है। -

१ शैक्षणिक बाधा - वर्ष २०११ कि जनगणना रिपोर्ट यह बताता है कि देश में महिला साक्षरता दर ६४.४७ प्रतिशत है। जबकि पुरुष में साक्षरता दर ८३ प्रतिशत है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग कि २०१८ के

अपने रिपोर्ट में यह बताया है कि लडकियों में १५ से १८ वर्ष के आयु वर्ग के लगभग ४० प्रतिशत किसी भी शैक्षणिक संस्थान में पंजिकृत नहीं है। केवल साक्षरता दर में वृद्धि होने से महिला वर्ग को शैक्षणिक रुप से संबल माना जाना भूल होगी। जब तक कि महिला वर्ग मे अपने शैक्षणिक अधिकार के प्रति पर्याप्त चेतना का अभ्युदय न हो जाए।

२ आर्थिक बाधा – भारत के पारम्परिक पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने महिलाओं को केवल सम्पत्ति एवं साधन के रुप में प्रयोग किया है। समकालिन विश्व में सकल घरेलू उत्पाद में महिला भागीदारी ३७ प्रतिशत है। वहीं भारत में यह भागीदारी केवल १७ प्रतिशत है। सी. एम. आई. ई. के रिपोर्ट के अनुसार मार्च वर्ष २०२२ में श्रम भागीदारी में ग्रामीण महिलाओं का प्रतिशत ९.९३ है। जबकि पुरुष वर्ग कि भागीदारी ६७.३० प्रतिशत दर्ज किया गया। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का देश के ग्रोथ में प्रत्यक्ष भागीदारी है। अतः ग्रामीण महिलाओं कि दशा सुधारने तत्काल कार्यावाही कि आवश्यकता है।

३ सामाजिक बाधा – ग्रामीण भारत में महिलाओं कि सामाजिक स्थिती रुढ़िवादी विचारधारा से प्रभावित है। ग्रामीण भारत कि ९० प्रतिशत महिलाओं कि आजिविका का आधार कृषि है। ग्रामीण भारत कि सामाजिक संरचना पुरुष प्रधान होने के कारण, महिलाओं कि सामाजिक गतिविधियों सहभागिता कम होती है। इस दिशा में सामाजिक कार्यक्रमों के योजना बद्ध क्रियान्वन ने सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया है।

४ राजनीतिक बाधा – ग्रामीण संरचनाओं में सवैंधानिक व्यवस्था के तहत महिलाओं कि राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित किए जाने ५० प्रतिशत तक सीटों का आरक्षण महिलाओं के लिए किए गए हैं। भारत में महिला प्रतिनिधित्व ने औपचारिक समानता तो प्राप्त कर लिया है। लेकिन व्यवहारिक विश्लेषण से इस बात कि पुष्टि होती है कि वर्तमान महिला प्रतिनिधित्व कि भूमिका पुरुष वर्गीय चिंतन के अधिपत्य में क्रियान्वित होती है। इस व्यवस्था में सुधार के लिए प्रत्यक्ष पहल कि आवश्यकता है।

५ तकनीकि बाधा – सूचना, संचार एवं तकनीकि विकास ने मानव चेतना के विकास को एक नया आयाम दिया है। जहां देश चाँद पर ध्वजारोहण कर चुका हैं वहीं दुसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश जगहें सूचना एव संचार क्रांति से अछूता है। ग्रामीण महिलाओं का विशाल वर्ग तकनीकि नवाचार से कोसो दूर प्रतीत होता है।

आज भी ग्रामीण महिलाओं के लिए तकनीकि शिक्षा स्वप्न ही बना हुआ है। क्योकिं ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकि संस्थानों का अभाव है। अतः इस ओर सरकार को योजनाबद्ध ढंग से कदम उठाने कि आवश्यकता है।

६ शारीरिक बाधा – देश में महिलाओं के विरुद्ध होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अपराध के ग्राफ में लगातार वृद्धि चिंता का विषय है। महिलाओं के विरुद्ध विभिन्न अपराध जैसे कि शारीरिक उत्पीड़न, दहेज उत्पीडन, बाल विवाह उत्पीडन, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा एवं महिलाओं तस्करी आदि अत्यन्त गंभीर समस्या बनी हुई है। जिससे ग्रामीण महिलाएं भी नित्य प्रति प्रभावित हो रहीं है। पोषण आहार कि कमी एवं अच्छे स्वास्थ्य सुविधा के अभाव में, उचित शिक्षा एवं सहीं रोजगार के अभाव में जीवन यापन के लिए ग्रामीण महिलाएं विवश ही नजर आतें है। एन आर एल एम जैसे सरकारी प्रयास से महिला समूहो के जीवन में सार्थक परिवर्तन परिलक्षित हुआ है लेकिन अभी भी ग्रामीण महिलाओं के दशा में सुधार के लिए सुढृढ़ महिला संगठन कि आवश्यकता बनी हुई है। जो अपने अधिकारो के लिए सामाजिक शोषणकारी व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति कर सके।

संदर्भ सूचीं –

1. लक्ष्मीकांत, एम. (2022) "भारत की राजव्यवस्था", McGraw Hill Education (India) Private Limited, Chennai
2. गाबा, ओम प्रकाष (2018) "राजनीति चिंतन की रूपरेखा", मयुर बुक्स, दरियागंज, नयी दिल्ली
3. फड़िया, डॉ. बी. एल. एवं फड़िया डॉ. कुलदीप (2019) "भारतीय शासन एवं राजनीति", साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा (उ. प्र.)
4. गाबा, ओम प्रकाश (2018) "राजनीति विज्ञान विश्वकोश", मयुर बुक्स, दरियागंज, नयी दिल्ली
5. www.education.gov.in
6. https://en.wikipedia.org/wiki/Women
7. www.panchayat.gov.in

■ ■ ■